Date 28/05/2020 Page No. 1 to 3

Saathi

B.A., PART- IST
POLITICAL SCIENCE
PAPER- I (BASIC PRINCIPLES OF POLITICAL THEORY)
CH-11 (JUSTICE)
LECTURE NO.-37 (THIRTY SEVEN)

By, OM KUMAR SINGH
ASSISTANT PROFESSOR
DEPTT. OF POL. SC.
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
LNMU, DARBHANGA

आर्नोल्ड ब्रेचट का न्याय सिद्धांत

आर्नोल्ड ब्रेचट ने अपनी पुस्तक 'Political Theory' में न्याय सिद्धांत की विवेचना की है। ब्रेचट के अनुसार, "न्याय की धारणा वांछित स्थिति के प्रति हमारे स्वभाव पर निर्भर करती है और एक ऐसे बर्तन की भाँति है, जिसके कई तत्व होते हैं।" उनका कहना है कि न्याय या तो सभ्य जीवन की परम्परागत संस्थाओं पर आधारित होती है अथवा वह परम्परागत संस्थाओं से आगे बढ़ जाती है। इन्होंने इस प्रकार न्याय को दो रूपों में वर्गीकृत किया है—

(1) परम्परागत न्याय
(2) अपरम्परागत न्याय

(1) परम्परागत न्याय : Traditional Justice

यह रीति-रिवाज, प्रथाओं और परम्पराओं पर आधारित होती है। यह उन मूलभूत संस्थाओं को स्वीकार करती है जो हमारे दैनिक सामाजिक जीवन की आधार है। इस प्रकार की मूलभूत संस्थाओं या प्रथाओं में प्रमुखतया हैं—

(i) एक पत्नी विवाह प्रथा
(ii) परिवार
(iii) निजी सम्पत्ति
(iv) पैतृक धन के सम्बंध में उत्तराधिकार की व्यवस्था
(v) समझौता करने की स्वतंत्रता और समझौते की बाध्यकारी शक्ति।

Scanned with CamScanner

Date __/__/____

Saathi

परम्परागत न्याय की धारणा उस मंदिर में निहित है, जो वर्णित पाँच आधारों पर टिका हुआ है। उसमें इन संस्थाओं के औचित्य को कोई चुनौती नहीं दी जाती है। जब व्यक्ति इन संस्थाओं के अनुसार आचरण करता है, तब वह न्याय भावना के अनुसार होता है और जब इनका उल्लंघन करता है, तब वह न्याय-संगत नहीं होता है।

ब्रेचट के अनुसार परम्परागत न्याय भावना में निम्न-लिखित तत्व शामिल होते हैं—

(i) व्यक्ति ज्ञानपूर्वक अथवा अज्ञानपूर्वक ढंग से परम्परागत संस्थाओं को अपने तर्क में स्वीकार करता है।

(ii) व्यक्ति इनका प्रयोग क्रमिक तर्क और पूर्व कल्पनाओं को प्राप्त करने के लिए करता है।

(iii) वह निश्चितता और औचित्य बनाये रखने वाले नियमों और विनियमों को स्वीकार करता है।

(iv) वह इन संस्थाओं की आलोचना के विरुद्ध तर्क करता है।

(2) अपरम्परागत न्याय
Trans-traditional Justice :—

जब पहले से चली आ रही परम्परागत संस्थाओं से व्यक्ति अपने आपको पृथक कर लेता है और अपने दृष्टिकोण से आलोचना और मूल्यांकन करता है तो अपरम्परागत न्याय की धारणा का जन्म होता है। इसमें व्यक्ति अपनी धारणा और विश्वास के आधार पर कल्पना करता है कि कौन-सी उपयोगी परिस्थितियाँ हो सकती हैं, जिनकी ओर समाज को बढ़ना चाहिए, जिससे कि न्याय-पूर्ण जीवन के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। वह विचार करता है कि अनेक महत्वपूर्ण उद्देश्यों में कौन-सा उद्देश्य उपयुक्त है और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कौन-से साधन उपयुक्त हैं।

अपरम्परागत न्याय के अन्तर्गत भिन्न-भिन्न समयों पर भिन्न-भिन्न व्यक्तियों द्वारा न्याय के अलग-अलग

Page No.

Scanned with CamScanner

Date __/__/____

Saathi

मापदण्डों के आधार पर जाँचा-परखा गया है। काण्ट के अनुसार "यदि पृथ्वी पर कोई परम मूल्यवान वस्तु है, तो वह व्यक्ति का गौरव और महत्व है।"

19वीं सदी में व्यक्तिवादियों ने केवल व्यक्ति की भलाई को ही न्यायसंगत माना, जबकि संघवादियों के लिए संघ की भलाई ही न्यायसंगत है।

विभिन्न राजनीतिक दलों के लिए भिन्न-भिन्न मूल्य न्यायपूर्ण हैं जैसे- लोकतंत्रवादी दलों के लिए बहुमत, समाजवादी के लिए समानता, उसी प्रकार अन्य दलों के लिए अन्य मूल्य न्यायपूर्ण होते हैं।

वास्तव में, न्याय क्या है, वह व्यक्ति विशेष की व्यक्तिगत धारणा एवं राजनीतिक दल के लिए उसके विशेष विचारधारा पर निर्भर करता है।

ब्रेचट के अनुसार न्याय के सार्वभौमिक और स्थिर आधार तत्व निम्नलिखित हैं-

(i) सत्य;
(ii) मूल्यों के आधारभूत क्रम की सामान्यता;
(iii) कानून के समक्ष समानता या समानता का व्यवहार;
(iv) स्वतंत्रता;
(v) प्रकृति की अनिवार्यताओं के प्रति सम्मान।

संभावित प्रश्न:

आर्नाल्ड ब्रेचट ने न्याय की व्याख्या किस प्रकार की है? न्याय के सार्वभौमिक और स्थिर आधार तत्व कौन-कौन-से हैं?

Scanned with CamScanner